# वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी भाषा की सार्थकता

*प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,*

*प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,*
*डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.*

## शोध सारांश

*किसी भाषा की ताकत के बोध का सिर्फ एक पैमाना बना दिया गया है, वह बाजार में कितनी दौड़ सकती है। अमेरिका जैसे देश एशियाई भाषाओं का कटूनीतिक और व्यापारिक इस्तेमाल करते हैं। हम गोरी चमड़ी में किसी को हिन्दी बोलते हुए सुनते हैं तो बड़ा आनन्द आता है। इस आनन्द की कोई वजह नहीं है, क्योंकि यह सब हिन्दी की स्वीकृति या इसके सम्पन्नता का लक्षण नहीं है। इसमें सन्देह नहीं कि आज हिन्दी का बाजार में, खासकर मीडिया और मनोरंजन उद्योगों में एक दमकता हुआ रूप है। कहा जा सकता है कि हिन्दी बाजार में पैदा हुई, बाजार में पली–बढ़ी और अब बाजार में खूब दौड़–मचल रही है। विश्व बाजार की नयी स्थितियों में यही हिन्दी भाषा की सबसे बड़ी विडम्बना है। हिन्दी भाषा को उसके मूल स्वभाव और आकांक्षा से दूर किया जा रहा है। हिन्दी केवल माल बेचने की भाषा बन रही है। वह केवल लालसाओं और मरीचिकाओं की भाषा बन रही है।*

**बीज शब्द –** *इक्कीसवीं सदी, वैश्वीकरण, हिन्दी भाषा, सार्थकता।*

भाषा मनुष्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जिसके माध्यम से सभ्यता के विकास में दिन प्रतिदिन महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। वैश्वीकरण, बाजारीकरण एवं उत्तरआधुनिकता के इस दौर में जब भाषाई महत्व को बाजार से जोड़कर देखने की प्रक्रिया शुरू हुई है तो ऐसे में दुनिया की अनेक भाषाएँ अपनी–अपनी देशी अस्मिता बनाये रखने के लिए संघर्ष करती हुई नजर आ रही हैं। भाषा के प्रश्न पर बात करने से पहले वैश्वीकरण को समझना जरूरी है। वैश्वीकरण से आशय स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व पटल पर रूपान्तरण की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा साथ–साथ कार्य भी करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, तकनीकी ताकतों का एक मिश्रण है। वैश्वीकरण का उपयोग ज्यादातर आर्थिक वैश्वीकरण के सम्बन्ध में किया जाता है। वैश्वीकरण का सीधा अर्थ है दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ता हुआ एकीकरण। वैश्वीकरण आधुनिक विश्व की वह छत है जहाँ से दुनिया के प्रत्येक समाज को देखा जा सकता है। वैश्वीकरण की अवधारणा पूरे विश्व को राष्ट्रों के भौगोलिक बंधनों से बिलग करती हुई एक विश्व व्यवहार का धरातल उपलब्ध कराती है। सरल शब्दों में वैश्वीकरण पूरे विश्व को विश्वगाँव में तब्दील कर रहा है।

कुछ लोग समझते हैं कि हिंदी देश के सभी राज्यों में नहीं बोली जाती और इसलिए हमने अंग्रेजी को एक व्यापक स्तर पर शिक्षण का प्रभावी अंग बना लिया है। परन्तु हिंदी भाषा का इतिहास कुछ और कहता है। संपूर्ण भारत में मिले शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के माध्यम से ऐसे प्रमाणिक ऐतिहासिक तथ्यों से यह प्रमाणित होता

है कि आठवीं शताब्दी ई.पू. तक संस्कृत आर्यों की सामान्य बोलचाल की भाषा होने के साथ ही साहित्य की परिनिष्ठित भाषा भी थी। कालांतर में यह भाषा "पाली" के रूप में विकसित हुई जो तीसरी शताब्दी ईस्वी के अंत तक इसी पाली भाषा से एक अपभ्रंश भाषा "प्राकृत" का जन्म हुआ। हिंदी साहित्य का प्रारम्भ इसी प्राकृत भाषा से हुआ माना जाता है। प्राकृत फारसी में "हिंदवी" के नाम से जानी जाने लगी । "हिंदवी" शब्द की उत्पत्ति "सिंधी" से मानी गई क्योंकि फारसी लोग "स" को "ह" उच्चारित करते थे। और इस तरह "हिन्दवी" शब्द बाद में हिंदी हो गया। मूलतः हिंदी भाषा ही बाद में विखंडित होकर मागधी, महाराष्ट्री, अर्धमागधी आदि भाषाओं में परिवर्तित हो गयी। वर्तमान पंजाबी, बिहारी, गुजराती, मराठी, असमिया, मलयाली और उड़िया आदि भाषाओँ का का जन्म इन्ही भाषाओं से हुआ माना जाता है। वस्तुतः "प्राकृत" अथवा "हिंदवी" भाषा ही आज विभिन्न राज्यों की नवीन भाषाओं के रूप में विकसित हो गयी। संस्कृत की मौलिक प्रथम उत्तराधिकारी भाषा हिंदी ही मानी जाती है और इसे सम्पूर्ण भारत की मातृभाषा का दर्जा मिलना चाहिए।

वर्तमान की इक्कीसवीं सदी आज बीसवीं सदी से भी अधिक तीव्र परिवर्तनों वाली तथा चमत्कारिक उपलब्धियों वाली सदी सिद्ध हो रही है। विज्ञान एवं तकनीक के सहारे पूरी दुनिया एक वैश्विक गाँव में तब्दील हो रही है और स्थलीय व भौगोलिक दूरियाँ अपनी अर्थवत्ता खो रहीं हैं। वर्तमान विश्व व्यवस्था आर्थिक और व्यापारिक आधार पर ध्रुवीकरण तथा पुनर्संघटन की प्रक्रिया से गुजर रही है। ऐसी स्थिति में विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों के महत्त्व का क्रम भी बदल रहा है। नव विकास की प्रक्रिया में निरन्तर भाषा को मजबूत करने के दायित्वों में कमी आती गयी और अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों से शिक्षा ग्रहण करना श्रेष्ठता का मानक बन गया और लोग कष्ट उठाकर भी अपने बच्चों को अंग्रेंजी माध्यम से पढ़ाने के लिए बाध्य होते गये और आज देश में निजी क्षेत्रों में अंग्रेजी माध्यम से स्कूल चलाना बेहद लाभदायक व्यवसाय बन चुका है जिससे दिन प्रतिदिन अंग्रेजी स्कूलों की संख्या में इजाफा होता जा रहा है। इससे भाषा की चिन्ता का जूनून समाप्त होता गया। हिन्दी को राजभाषा का सम्मान केवल लिखित रूप से तो मिल गया किन्तु हिन्दी सरकारी फाइलें अंग्रेजी में दौड़ती रहीं और हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाड़ों के दौरान बड़ी–बड़ी भाषणबाजी भी होती रही है और आज भी जारी है जिसका कोई निर्णायक हल नजर नहीं आ रहा है।

वैश्वीकरण के उपरान्त बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में आर्थिक उदारीकरण के चलते बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने हमारे देश की सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक दशाओं में दखलन्दाजी शुरू कर दी। अपनी ताकत और लाभ में बढ़ोत्तरी के लिए भारतीय भाषाओं और संस्कृति को दबाव में लेना शुरू किया। अनवरत व्यावसायिकता की तरफ बढ़ती मीडिया ने भी एक अलग रूप की हिन्दी का रास्ता तैयार कर दिया। इसी भिन्न रूप की हिन्दी ने नयी पीढ़ी को अपने गिरफ्त में कर लिया।

आधुनिक युग भूमण्डलीकरण का युग है। उपभोक्ता–संस्कृति का विस्तार हो रहा है। सम्पूर्ण विश्व एक बाजार के रूप में परिवर्तित हो रहा है। भाषा के सामने अभिव्यक्ति का एक संकट खड़ा हो गया है। हिन्दी के सामने भी एक चुनौती है जिसका उसे सामना करना है अपितु भूमण्डलीकरण के दौर में अभिव्यक्ति के बहुआयामी स्वरूप के अनुकूल भी स्वयं को ढालना है। लन्दन में छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन इस दृढ़ संकल्प के साथ समाप्त हुआ था कि नयी सहस्राब्दि में हिन्दी को विश्व भाषा बनाना है। माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी के द्वारा सम्मेलन में प्रसारित सन्देश का एक अंश इस प्रसंग में करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है –''भारत की

सभी भाषाएँ भारत माता के आँगन की फुलवारी के समान हैं और संविधान द्वारा घोषित राजभाषा होने के नाते हिन्दी–पुराधाओं पर यह दायित्व है कि इस फुलवारी को भी सींचें तथा हिन्दी को सर्वमान्य सम्पर्क–भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में सहायक वातावरण बनाएँ। यह कार्य तभी हो सकता है, जब हम रूढ़िवादी और क्षेत्रीयता के छोटे भाव से उठकर सबको साथ लेकर चलने की मानसिकता बनाएँ,वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दी विश्वपटल पर स्वर्णिम अक्षरों से अपना नाम अंकित करेगी।''

आंकड़ों पर गौर करें तो दुनिया के सभी 206 देशों में हिन्दी बोलने वालों की तादात अब एक अरब तीस करोड़ के पास पहुँच चुकी है जो कि दुनिया में बोली जाने वाली किसी भी भाषा से अधिक है। हिन्दी की इसी व्यापकता में सर्वाधिक योगदान यदि किसी का है तो वह है उन भारतवंशियों का जो 150–200 वर्ष पूर्व शर्तबंदी मजदूरों के रूप में विश्व के अनेक देशों में पहुँचे थे और जिन्हें 'गिरमिटिया' कहा जाता था। वे अपने साथ कुछ नहीं केवल अपनी भाषा की वह धरोहर लेकर आए थे जिसे उनकी अगली पीढ़ियाँ आज भी सजोकर रखे हैं। आज इन देशों में हिन्दी अपनी जड़ें जमा चुकी हैं। मॉरीशस के प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत जी (मॉरीशस के प्रेमचन्द) ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद में 'साहित्य महोपाध्याय' की उपाधि ग्रहण करते हुए सन् 2001 में कहा था कि ''हिन्दी साहित्य को विश्व का वीसा मॉरीशस से ही मिला।'' यहाँ तक ही नहीं विशेषकर 'दक्षेस' (सार्क) के देशों में भी हिन्दी लोकप्रिय हैं। भूमण्डलीकरण के इस युग में यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देशों में भी लाखों की संख्या में भारतीय तकनीशियन, शिक्षक, चिकित्सक और व्यापारी फैले हुए हैं, जो अपनी बोलचाल में हिन्दी का भी प्रयोग करते हैं। आज विश्व के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन होता है। अकेले अमेरिका में 80 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। निःसन्देह हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। पिछले 72 वर्षों में हिन्दी की शब्द सम्पदा का जितना विस्तार हुआ है उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा का हुआ हो।

इस बात को सर्वप्रथम सन् 1999 ई0 में"मशीन ट्रांसलेशन समिट' अर्थात् यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. होजुमि तनाका ने भाषाई आँकडे पेश करके सिद्ध किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत आँकडों के अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय है। अंग्रेजी तो तीसरे क्रमांक पर पहुँच गई है। इसी क्रम में कुछ ऐसे विद्वान अनुसंधित्सु भी सक्रिय हैं जो हिंदी को चीनी के ऊपर अर्थात् प्रथम क्रमांक पर दिखाने के लिए प्रयत्नशील हैं। डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल ने भाषा शोध अध्ययन २००५ के हवाले से लिखा है कि विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ पच्चीस लाख दस हजार तीन सौ बावन है –जबकि चीनी बोलने वालों की संख्या केवल नब्बे करोड़ चार लाख छह हजार छह सौ चौदह है। इस समय हिंदी संपूर्ण विश्व की सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा है। आज संपूर्ण विश्व में हिंदी 64 करोड़ लोगों की मातृभाषा, 24 करोड़ लोगों की दूसरी भाषा और 42 करोड़ लोगों की तीसरी, चौथी, पांचवीं अथवा विदेशी भाषा है।

वैश्वीकरण की प्रक्रियाएँ उसे संयुक्त राज्य अमेरिका, मॉरिशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका, जर्मनी, यमन, युगाण्डा, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर ले गयी हैं। जबकि पाकिस्तान, फिजी, युआना, नेपाल, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि में इसकी पहुँच थी। सन् 1985–86 ई0 में देवनागरी वर्ड प्रोसेसर आया और 1987–88 में देवनागरी फॉण्ट की रचना हुई। सन् 1990ई0 में बुक आफ फैक्टस ने माना कि हिन्दी उर्दू ने अंग्रेजी और इस्पेनिश को पीछे छोड़ते हुए विश्व की दूसरी सबसे ज्यादा बोली

जाने वाली भाषा के रूप में अपना स्थान बना लिया। सन् 1991 में अविनाश चोपड़ा ने इटांश इन्फोन्डिंग स्कीम का विकास कर इन्टरनेट पर हिन्दी दस्तावेजों को रोमन और देवनागरी में उपलब्ध करवाया। सी–डेक लीप शब्द प्रसंस्करण भारत भाषा फॉण्ट एम.एस.ऑफिस 2000 हिन्दी संस्करण वुडवर्ड, हिन्दी लर्निंग जोन जैसे बहुत से आधुनिक तकनीकी प्रयासों ने हिन्दी को कम्प्यूटर युग में सुगम विचरण की शक्ति भी दी है। ई–पत्र जैसे प्रयास हिन्दी को (ई–मेल को) स्थापित कर रहे हैं। ई–वार्ता भारतीय भाषाओं में चैट सुविधा देती है। अक्षर माला, विण्डोज, मेलजोल जैसे नये–नये प्रयास लगातार हो रहे हैं। वैश्वीकरण ने हिन्दी का अवसर की उपलब्धता के साथ चुनौती भी दी है।

हमारे नागरिक हिन्दी और भारतीय भाषाओं का प्रयोग जरूर करते हैं, लेकिन क्या ऐसा हर स्तर पर , हर जगह और हर समय कर सकते हैं ? नहीं कर सकते । यही वह फर्क है जो आजाद देश को भी गुलाम बना देता है जब भारत गुलाम था, तब भी हम लोग अपनी भाषाओं का प्रयोग करते थे लेकिन अब हमें आजाद हुए 74 साल हो गए, इसके बावजूद हमारे सर्वोच्च न्यायालय में बहस और फैसले हिन्दी में नहीं होते ,संसद के कानून हिन्दी में नहीं बनते, सरकार के मूल नीति दस्तावेज हिन्दी में नहीं बनते , संघ सेवा आयोग के पर्चे तक हिन्दी में नहीं बनते और इस देश में डॉक्टरी, इंजीनियरिंग, रसायन ,भौतिक शास्त्र, कानून और विदेश नीति आदि का उच्च अध्ययन हिन्दी में नहीं होता। हॉलाकि वर्तमान की शिक्षानीति में सभी विषयों की शिक्षा हिन्दी में करने की घोषणा की गई है। देश में कोई भी महत्वपूर्ण काम हो वह अग्रेजी के बिना नहीं होता यानी अंग्रेज तो चले गये लेकिन अपनी कुर्सी पर वह अपनी इस भाषा को बिठा गये हैं। गोरे अंग्रेजों ने तो इसे सिर्फ कुर्सी पर ही बिठाया था पर हमारे देश के अंग्रेजी मानसिकता से ग्रस्त लोगों ने उसे अपने दिलो – दिमाग पर बिठा लिया है। आज देश में भाषा का परिदृश्य कैसा है? अंग्रेजी मालकिन कुर्सी पर बैठी है और हिन्दी नौकरानी उसके चरणों में लेटी है जो नेता चुनाव के दौरान वोट हिन्दी में माँगते हैं वे सत्तारूढ़ होते ही नौकरशाहों की नौकरी करने लगते हैं। नौकरशाहों को पता है कि यदि पूरा राजकाज हिन्दी में चलनें लगा तो देश में नौकरशाही की जगह लोकशाही स्थापित हो जाएगी, उनका जादू टोना खत्म हो जाएगा । इसलिए वें हिन्दी दिवस बड़े जोर–शोर से मनाते हैं। हिन्दी दिवस वास्तव में नौकरशाहों का दिवस है।

अनेक अवरोधों को पार करते हुए अंग्रेजी अब सरकारी कार्यालयों से निकलकर हमारे घरों ,द्वार और बाजारों में प्रवेश कर गई है । क्या आपको कही किसी घर में अपने माँ बाप के लिए ,माताजी या पिताजी संबोधन सुनने में आता है? हर पत्नी आजकल वाइफ कही जाती है और माँ–बाप, मम्मी–डेडी बन गये हैं। सबसे ज्यादा दुःख तब होता है जब हम किसानों के द्वारा खेती के लिए खरीदे जाने वाले बीज, खाद एवं कीटनाशक दवाओं के डिब्बों/थैलों में अंग्रेजी लिखी होती है जिसे किसान न पढ़ सकता है और न ही समझ सकता है। वह किसी की सहायता से जैसे–तैसे अपना काम चलाता है। वास्तव में शब्द कोरे शब्द नहीं होते। उनमें अर्थों की गहराइयाँ छुपी होती हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि हम विदेशी भाषाओं के विरोधी हैं। यदि हमारे बच्चे स्वेच्छा से विदेशी भाषाएँ सीखें तो उसका भरपूर स्वागत होना चाहिए। देश के लिए जितनी खिड़कियाँ खुलें, उतना अच्छा है। लेकिन सिर्फ अंग्रेजी लादने का अर्थ है, शेष सभी खिड़कियाँ बंद कर देना। यदि वर्तमान सरकार वास्तव में राष्ट्रवादी–सरकार बनना चाहती है, तो उसे अंग्रेजी की अनिवार्यता हर जगह से खत्म करनी चाहिए। यदि वर्तमान की केन्द्र सरकार देश में करोड़ों लोगों तक बैंकों का जाल फैलाना चाहती है, तो उसे उन्हें भारतीय भाषाओं में काम करने

के लिए बाध्य करना होगा। पाठशालाओं, अदालतों, आदि की व्यवस्था अपनी भाषा में करने की अनिवार्यता करें। अपने बच्चों से और आपस में बातचीत भी अपनी भाषा में करें। अपने मोबाइल फोन और कम्प्यूटर पर भी स्वभाषा का प्रयोग करना शुरू करें। बड़े –बड़े उद्योगपतियों और व्यवसायियों को चाहिए कि वे अपने विक्रय चिह्न, विज्ञापन और सारा काम–काज स्वभाषाओं में करें। अपनी भाषा में दुनिया की सभी भाषाओं से शब्द लेने की छूट होनी चाहिए लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम हिन्दी को भिखारी भाषा बना दें। आज कल कई टी0वी0 चैनलों और अखबारों में कई बार ऐसे वाक्य सुनने और पढ़ने में आते हैं, जिनमें अंग्रेजी के शब्दों के बिना वे वाक्य पूरे ही नहीं होते। अंग्रेजी शब्द जबर्दस्ती प्रयोग किए जातें हैं। अपनी भाषा को जितना शुद्ध,प्राकृतिक और स्वाभाविक रखा जा सके उतना अच्छा होगा! यदि हम अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों, मुहावरों,कहावतों और शैलियों का प्रवेश हिन्दी में करवा सकें तो वह राष्ट्रीय एकता और समरसता के लिए वरदान होगा। हिन्दी– दिवस मनाने का अर्थ यह नहीं कि हम अहिन्दीं भाषियों पर हिन्दीं थोपने के पक्षधर हैं। कतई नहीं । भारत की समस्त भाषाएँ समान सम्मान की अधिकारिणी हैं। जिस दिन हम हिन्दीं भाषी लोग अन्य भारतीय भाषाएँ सीखना शुरू कर देंगे, हिन्दीं पूरे राष्ट्र की कंठहार बन जाएगी।

हमारी मातृभाषा हिन्दी भारत के अनेक राज्यों जैसे मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश में प्रमुख रूप से बोली जाती है। अधिकतर लोग इस बात को मानते हैं कि हिन्दी भाषा बोलने में, लिखने में, पढ़ने में सरल है। अंग्रेजी भाषा की जटिलता के कारण छात्रों को अधिकतर विषयवस्तु के क ख ग भी समझ नहीं आ पाते हैं। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम भी अंग्रेजी में होने के कारण उनका शिक्षा का ज्ञान अपूर्ण ही रहता है। अतः विज्ञान शिक्षण में सुधर हेतु मातृभाषा को शिक्षण का माध्यम बनाना ही होगा। जैसे–प्राथमिक स्तर पर बच्चे को अपने परिवेश में घुलने–मिलने और साथ ही खुशी–खुशी इसकी छानबीन हेतु उनको उनकी मातृभाषा में शिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे विषय वस्तु को स्वाभाविक ढंग से समझ सकें। इससे उनको भविष्य में उच्च विज्ञान के प्रति प्राकृतिक वातावरण आदि समेत सभी तकनीकी व रचनात्मक खोजी कार्यों की ओर अग्रसर किया जा सके। साथ ही इस स्तर पर मूलभूत निजी भाषाई क्षमता को विकसित किया जाना चाहिए जिसमें बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल हैं।

वास्तविकता की बात की जाए तो विद्यार्थी और शिक्षक के बीच अच्छा संबंध् उनकी मातृभाषा में ही संभव है । विद्यार्थी को प्रयोग की योजना बनाने, धरणाओं पर बहस करने और अवलोकनों को आलोचनापरक दृष्टिकोण से विश्लेषित करने का अवसर मिलता है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में विद्यार्थी बेहतर परिणाम सामने लाते हैं। विज्ञान को जानने एवं सतझने के लिए भाषा में सहजता और दक्षता जरूरी है । मनोवैज्ञानिकों ने हमारी भाषा और सोच के के घनिष्ट सम्बन्ध को भी परिभाषित किया है । भाषा सिद्धांत निर्माण या धारणाओं के बनाने में भी महत्त्वपूर्ण कार्य करती है स अनुभवों के होने और उनको अभिव्यक्त करने का श्रेश माध्यम भी भाषा ही है स विज्ञान सीखने में भाषा के योगदान पर हुए शोधों ने रूपकों और उपमाओं को बृहत्त तरीकों से समझने के लिए साथ ही वैज्ञानिक कार्यकलापों में अर्थ ढूँढने के लिए अवसर प्रदान किया है।

हिन्दी के लिए एक सकारात्मक बात यह है कि उसका साहित्य अनुवाद के माध्यम से विश्व की दूसरी महत्त्वपूर्ण भाषाओं में पहुँच रहा है। उसके पठन–पाठन तथा प्रसारण की सुविधा अनेक देशों में उपलब्ध हो रही है। क्योंकि इसमें मानवीय और यांत्रिक अनुवाद की आधारभूत तथा

विकसित सुविधा है। जिससे यह बहुभाषिक कम्प्यूटर की दुनिया में अपने समग्र सूचना स्रोत तथा प्रक्रिया सामग्री (सॉफ्टवेयर) के साथ उपलब्ध हो रह है। साथ ही, यह इतनी समर्थ हो गई है कि वर्तमान प्रौद्योगिकीय उपलब्धियों मसलन ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट तथा एस.एम. एस. एवं वेब जगत में प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी सक्रिय उपस्थिति का अहसास करा रही है। हिन्दी में उच्चकोटि की पारिभाषिक शब्दावली विकसित हो रही है तथा वह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम आविष्कृतियों को अभिव्यक्त करते हुए मनुष्य की बदलती जरूरतों एवं आकांक्षाओं को वाणी देने में समर्थ हो गई है। हिन्दी आज वह विश्व चेतना की संवाहिका हो गई है। हिन्दी आज स्थानीय आग्रहों से मुक्त विश्व दृष्टि सम्पन्न कृतिकारों की भाषा बन गई है, जो विश्वस्तरीय समस्याओं की समझ और उसके निराकरण का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

जब हम उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी का परीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि वह न्यूनाधिक मात्रा में प्रायः सभी निष्कर्षों पर खरी उतरती हैं। आज वह विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों–जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस है– में किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती है। वह विश्व के विराट फलक पर नए कलेवर एवं चित्र के समान प्रकट हो रही है। आज वह बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की दूसरी सबसे बडी भाषा बन गई है। आज हिंदी विश्व के 206 देशों में बहुत ही सहजता से प्रयुक्त हो रही है और उसके प्रयोक्ताओं की संख्या एक अरब तीस करोड़ तक पहुँच गयी है। भारत के प्रशिक्षित पेशेवर लगातार विदेशों में अपनी सेवाएँ देने के लिए जा रहे हैं और उनके साथ हिंदी भी जा रही है। इसी तरह बहुराष्ट्रीय निगम बड़े पैमाने पर भारत में पूँजी निवेश कर रहे हैं। फलतः वे अपने लाभ के लिए ही सही हिंदी का प्रयोग करने के लिए अभिशप्त हैं। चीन की भाषा मंदारिन के पिछड़ने का मुख्य कारण यह है कि अड़तीस प्रतिशत चीनी मंदारिन नहीं बोल पाते हैं जबकि हिंदी की स्थिति इससे बेहतर है। केवल बाईस प्रतिशत भारतीय ही हिंदी बोल अथवा समझ नहीं पाते हैं। चीन में 56 बोलियाँ अथवा उपभाषाएँ हैं जो मंदारिन से एकदम भिन्न हैं। यह मान भी लिया जाय कि आँकडे झूठ बोलते हैं और उन पर आँख मूँदकर विश्वास नहीं किया जा सकता तो भी इतनी सच्चाई निर्विवाद है कि हिंदी बोलने वालों की संख्या के आधार पर विश्व की दो सबसे बडी भाषाओं में से है। लेकिन वैज्ञानिकता के मानदण्ड यह भी हैं कि हम इस तथ्य को भी स्वीकार करें कि अंग्रेजी के प्रयोक्ता भी विश्व के उतने ही देशों में फैले हुए हैं। वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक, व्यावसायिक तथा वैचारिक गतिविधियों को चलाने वाली सबसे प्रभावशाली भाषा बनी हुई है। चूंकि हिंदी का संवेदनात्मक साहित्य उच्चकोटि का होते हुए भी ज्ञान का साहित्य अंग्रेजी के स्तर का नहीं है अतः निकट भविष्य में विश्व व्यवस्था परिचालन की दृष्टि से अंग्रेजी की उपादेयता एवं महत्त्व को कोई खतरा नहीं है। इस मोर्चे पर हिंदी का बड़े ही सबल तरीके से उन्नयन करना होगा। उसके पक्ष में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आज अंग्रेजी के बराबर वह विश्व के सबसे ज्यादा देशों में व्यवहृत होती है। आज हिन्दी ने डिजिटल दुनिया में अंग्रेजी के एकाधिकार को समाप्त कर दिया है।

हिन्दी का स्वरूप अब विश्वविद्यालयों, संगोष्ठियों और अकादमियों में तय नहीं हो रहा है, बल्कि खुले बाजार में मुक्त स्पर्धा से तय किया जा रहा है। प्रतिभूत, निविदा, उपभोक्ता, संवेदी सूचकांक, विनिवेश आदि शब्दों का भी प्रयोग हो रहा है और नवनिर्माण भी निरन्तर होता जा रहा है। आज जनसामान्य तत्सम शब्दों का प्रयोग करते हुए देखे जाते हैं, जैसे – दिल्ली में बस के लिए तीव्र मुद्रिका का प्रयोग इसका सशक्त प्रमाण है। हिन्दी न केवल साहित्य, अपितु जनसामान्य की भाषा है और इसी कारण द्रुत

गति से बदलते परिवेश में उसने भी न केवल नया कलेवर धारण किया है, अपितु उस नये रूप में आशातीत सफलता भी अर्जित की है। आज मुक्त अर्थव्यवस्था की ध्वजात्मक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में अपने पाँव पसारने से पूर्व हिन्दी अखबारों, हिन्दी मीडिया की जानकारी करना चाहती हैं। छोटी–से–छोटी चीज से लेकर बड़ा–से–बड़ा ब्राण्ड हिन्दी का सहारा लेकर बाजार में उतारा जा रहा है। चाहे दक्षिण भारत की फिल्में हों या कोलम्बिया पिक्चर्स या पैरामाउण्ट पिक्चर्स–जैसी विदेशी फिल्म का निर्माण कम्पनियाँ अपनी फिल्में हिन्दी में डब करा रही हैं और आज स्टार, जी, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिकल, सहारा सभी न्यूज चैनल हिन्दी में कार्यक्रमों को तवज्जो दे रहे हैं।

हिन्दी सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना को बनाये रखने और समृद्ध करने का माध्यम रही हैं। अतीत में संस्कृति – पुरुषों, जैसे – शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, नामदेव, ज्ञानदेव, कबीर, सूरदास, तुलसीदास, दयानन्द सरस्वती, ज्योतिराव फुले, विवेकानन्द आदि से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं एवं बोलियों की सुरक्षा सुविचारित योजना के साथ करनी होगी। इसके लिए आवश्यक है कि हम इनके प्रचार–प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील रहें। तभी वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी भाषा की सार्थकता सिद्ध होगी।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. हिन्दी कैसे बने विश्वभाषा (लेख)– वेद प्रताप वैदिक वाक, अंक–02, वर्ष–2007
2. भूमण्डलीकरण, भारत की भाषा समस्या और डॉ0 लोहिया (लेख)– डॉ0 ब्रज कुमार पाण्डेय, वाक, अंक–03, वर्ष 2007
3. भाषा का वैश्वीकरण और वैश्वीकरण की भाषा (लेख)– डॉ0 अशोक केलकर, आलोचना, अंक–09, वर्ष 2002
4. वरिष्ठ साहित्यकार राजेन्द्र राव का कथन– एक साक्षात्कार
5. भाषा, भाषी, भाषिकी (लेख) डॉ0 उदय नारायण सिंह, बहुवचन, अंक–2, अप्रैल–जून, 2000 ई0
6. गाँधी और हिन्दी– सं0–राकेश पाण्डेय, प्र0–राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, सं0–2015
7. केरल में हिन्दी की स्थिति (लेख) ए0 अरविन्दाक्षन, वाक, अंक–02, वर्ष 2007
8. हिन्दी का प्रश्न हम हार चुके हैं (लेख)– परमानन्द श्रीवास्तव, वागर्थ, अंक–86
9. गाँधी और हिन्दी–सं0–राकेश पाण्डेय, प्र0–राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, सं0–2015
10. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली–110002, सं0 2015 ई0।
11. डॉ0 मलिक मोहम्मद– राजभाषा हिन्दी, प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली–1100030, सं0 1993 ई0।
12. आजकल, जनवरी–2016(प्रवासी भारतीय समाज, भाषा, साहित्य और संस्कृति–विमलेशकान्ति शर्मा)
13. जयशंकर प्रसाद– चन्द्रगुप्त, चतुर्थ अंक, दृश्य छह, संजय बुक सेन्टर गोलघर वाराणसी, सं0 1989ई0
14. डॉ0 मलिक मोहम्मद– राजभाषा हिन्दी, प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली–1100030, सं0 1993 ई0।

15. डॉ0 हरदेव बाहरी– हिन्दी भाषा,संस्करण 1994ई0, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847, विश्वविद्यालय मार्ग, इलाहाबाद
16. डॉ0 हरदेव बाहरी– शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, परिशिष्ट 1, राजपाल ऐण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, सं0 1994ई0
17. आफताब आलम– द सण्डे इण्डिया, 30 मई 2010ई0
18. विनीत कुमार–नया ज्ञानोदय, मई 2010
19. प्रभाकर क्षेत्रिय– 'अन्यथा' जुलाई 2006
20. 'वागर्थ', दिसम्बर 2009